

आज का पुरुषार्थ 16 August 2022

Source: BK Suraj bhai

Website: www.shivbabas.org

धारणा – “आज चले... सभी आकर्षणों से दूर, पवित्रता के राह पर ”

प्योरीटी हम सभी का सर्वश्रेष्ठ पथ है। जिन राहों पर सारा कलियुगी संसार चल रहे है, हमारे राह उनसे भिन्न है।

दुनियावी मनुष्य के द्वारा संसार के वायब्रेशन्स को अति तमोप्रधान बनाया जा रहा है।

और पवित्र आत्माओं की सुगंधि, **पवित्र आत्माओं की शक्तिशाली किरणें** उस वातावरण को बहुत जल्दी नष्ट कर डालती है।

तो हमारा कार्य **मास्टर ज्ञान सूर्य** का है। जो सब जगह के अंधकार को दूर करके सबके चित को प्रकाशित करने वाला है।

अपने प्योरीटी को महत्व दे। इसके महत्व को समझे। और उन राहों को बिल्कुल त्याग दे, जो एक परसेन्ट भी इस मार्ग के विरुद्ध है।

यही सच्चा **वैराग्य** है, यही सच्चा **त्याग** है। और यही सच्चा **संन्यास** है।

हमें कलियुग की घोर रात्रि में रहते हुए, तामसिकता के माहौल में रहते हुए, अपने को पूरी तरह **मोह ममत्व** से मुक्त आसक्तियों से दूर अनासक्त बनाना है।

यही हमारी **श्रेष्ठ स्थिति है**। यही हमारा महान **लक्ष्य** है। क्योंकि जो ऐसा करने में सफल होंगे वे ही महान **योगी** बनकर इस संसार को **पवित्रता का दान** देंगे।

हमें यह दान अवश्य देना होगा। हमारी प्युयोर एनर्जी में हीलिंग एनर्जी होगी। यह **healing energy** दूर बैठे हुए भी अनेक आत्माओं को राहत दे सकेगी।

उनके शरीरों को भी **heal** कर सकेगी, आत्मा के भटकते मन को भी **एकाग्र** कर सकेगी।

तो अपने महत्व को समझे। अपने **प्योरीटी** को महत्व दे। और इस मार्ग पर **तीव्रता से** आगे बढ़ते हुए अपने final target तक पहुँचें।

यह मंजिल लम्बी है, यह लक्ष्य बहुत महान है। इसको बहुत कम आत्मायें प्राप्त करती है। लेकिन वे कम आत्मायें भी संसार के लिए वरदान होती है।

जैसे एक चन्द्रमा सारी रात के अंधकार को दूर कर देता है। एक सूरज कैसे **संसार को प्रकाशित** कर देता है! यह थोड़ी आत्मायें संसार के लिए बहुत बड़ा काम करती है।

तो चले अपनी इस **पवित्रता की राह** पर और देह के सभी आकर्षणों को पूरी तरह से नष्ट कर डाले।

जिनको भी इस महान लक्ष्य पर पहुंचना है वह ज्ञान का चिन्तन करते हुए, अपने **श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रहते हुए** वासनाओं की सभी स्थूल और सूक्ष्म कामनाओं को विराम दे दे।

तब ही हम **एकाग्रचित्त** हो पायेंगे और तभी दुसरो को हमारे पवित्र वायब्रेशन्स जायेंगे। **आत्मिक दृष्टि** का विशेष या दूसरे अभ्यास भी हो सकता है कि ..

" सभी फ़रिश्ते हैं " या सभी को " मूल देवस्वरूप में देखना " या सभी को उनके " आदि स्वरूप में देखना "

... चाहे वह किसी भी धर्म परिवार के आत्मायें हो।

आदि स्वरूप सबका ही श्रेष्ठ है। उस स्वरूप में सबको देखने का बहुत अच्छा अभ्यास करेंगे।

जो श्रेष्ठ योगी है, जिनकी पवित्रता बहुत ही स्ट्रांग है वह अपने को स्वमान दे

" मैं पवित्रता का सूर्य हूँ "

जो मातायें बहनें इस क्षेत्र में बहुत आगे निकल गई है वह अपने को स्वमान दे ... **" मैं पवित्रता की देवी हूँ "**

सभी अभ्यास करे →

" मैं परम पवित्र आत्मा हूँ " ... या ... " मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ "

इसी स्वमान से पानी को वायब्रेशन्स देकर फिर पानी पियें, दूध पियें, भोजन खायें ..

इससे देह में भी शुद्धि होगी। **कर्मेन्द्रियाँ शीतल होंगी।** हमारे सभी आकर्षण समाप्त होंगे।

तो आइये हम सभी **पवित्रता** के सुन्दर मंजिल पर चले। और जो **स्वमान** दिये गये उनका अभ्यास करते हुए

" पवित्रता के सागर से पवित्र वायब्रेशन्स ले "

और ...

" सर्वशक्तिमान से शक्तियों के वायब्रेशन्स ले "

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org